श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनपूजा

(रचयिता : आचार्य श्री विमर्शसागर जी महाराज)

स्थापना

व्यवहार व्रतों की बगिया में निश्चय व्रत पुष्प खिला करते।
कालादि लब्धियों से ऐसे, सुखकर संयोग मिला करते।।
हे नाथ! आपने यह सच्चा, शिवमार्ग जगत् को बतलाया।
जिसने जितना पुरुषार्थ किया, उसने उतना ही फल पाया।।
निष्कांक्ष भाव की सरिता में, अपने मन को नहलाता हूँ।
हे मुनिसुव्रत प्रभु ! सुव्रत वरो, भावों से हृदय बुलाता हूँ।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव-भव-वषट् सन्निधिकरणं।

(परि पुष्पांजलिं क्षिपामि)

रागादि भावमल से अब तक, स्वातम को मलिन किया स्वामी।
ज्ञायक होकर ज्ञायक जल से, नहलाया न अंतर्यामी।।
हे मुनिसुव्रत प्रभु! सुव्रत वरो, रागादिक मल प्रक्षाल करूँ।
भगवान आत्मा में रमकर, जन्मादिक भव जंजाल हरूँ।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

परद्रव्यों-पर्यायों में ही, उपयोग लगाता आया हूँ।
अपनी वैभाविक परिणति से, भवताप बढ़ाता आया हूँ।।

हे मुनिसुव्रत प्रभु सुव्रत वरो, निज अभवस्वभावी जाप करूँ।
शुद्धात्म द्रव्य गुण पर्यय से, आतम ध्याऊँ भवताप हरूँ।।
ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

जब हुआ निरतिशय पुण्योदय, लौकिक पद पाकर इतराया।
जो अक्षय पद का साधन है, उसको मैं जान नहीं पाया।।
हे मुनिसुव्रत प्रभु! सुव्रत वरो, अब पुण्य सातिशय पाऊँ मैं।
है अक्षय पद, शिवदायी जो, वह शुद्ध निजातम ध्याऊँ मैं।
ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कामादि विभावों का वेदन, आकुलता को उपजाता है।
जितना जितना रस लेता हूँ, उतना उतना झुलसाता है।।
हे मुनिसुव्रत प्रभु! सुव्रत वरो, शुद्धातम अनुभूति पाऊँ।।
ध्रुव ज्ञायक प्रभु में रम जाऊँ, चैतन्य सुधारस बरसाऊँ।।
ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

आनंदित हो-होकर मैंने, रसना इन्द्रिय को तृप्त किया।
घी, दुग्ध आदि शीतलरस की, धाराओं से अभिषिक्त किया।।
हे मुनिसुव्रत प्रभु! सुव्रत वरो, अब शुद्ध चिदारस पान करूँ।
हो शांत क्षुधा ज्वाला मेरी, ऐसा पुरुषार्थ महान करूँ।।
ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वातम-अनात्म के भेद बिना अब तक अतत्व श्रद्धान किया।
दर्शन मोहांध बढ़ाया है, नहिं सम्यक् दर्शन ज्ञान किया।।

हे मुनिसुव्रत प्रभु! सुव्रत वरो, अब मोहनीय अवसान करूँ।
सम्यक्त्वाचरण प्रगट करके, संयमाचरण का ध्यान करूँ।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ और अशुभ भावों द्वारा, वसुकर्म बढ़ाता आया हूँ।
सविपाक निर्जरा अनुभव कर, निज शक्ति घटाता आया हूँ।।
हे मुनिसुव्रत प्रभु! सुव्रत वरो, मुनि मन सम उत्तम तप पाऊँ।
अविपाक निर्जरा के द्वारा, आठों कर्मों को दहकाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ कर्मफलों की चाहत में, उत्तम शिवफल ठुकराया है।
इन्द्रिय सुख का अनुभव करके, अपना संसार बढ़ाया है।।
हे मुनिसुव्रत प्रभु! सुव्रत वरो, यह मानव जीवन सफल करूँ।
मुनिव्रत धारूँ, शिवमार्ग चलूँ, शिवफल पाऊँ निज अचल रहूँ।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय महामोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

अर्घ

पाने निज ज्ञान चेतना प्रभु, शुद्धोपयोग हो कर्म मेरा।
हो रत्नत्रय व्यवहार प्रगट, निश्चय रत्नत्रय धर्म मेरा।
हे मुनिसुव्रत प्रभु! सुव्रत वरो, सिद्धों सम अष्ट सुगुण पाऊँ।
अर्पित जल चंदन अष्ट द्रव्य, अष्टम भू पा थिर हो जाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घं निर्व.स्वाहा।

पंचकल्याणक

श्रावण कृष्णा द्वितीया गर्भ स्थान लिया।
माँ धन्य महापद्मा गर्भ कल्याण किया।।

हे प्रभु मुनिसुव्रतनाथ, हम पूजैं चरणा।
मिट जाये गर्भावास, आये तव शरणा।

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्ण द्वितीयां गर्भ मंगल मण्डिताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

बैसाख वदी दशमी जन्म उत्सव छाया।
सुर असुर इन्द्र सबका हृदय अति हर्षाया।।
हे प्रभु मुनिसुव्रतनाथ हम पूजैं चरणा।
हो जन्म रोग का नाश आये तव शरणा।।

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्ण दशम्यां जन्म मंगल मंडिताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

बैशाख वदी दशमी आपने तप धारा।
जीता चारित्र विमोह चारित्र स्वीकारा।
हे प्रभु मुनिसुव्रतनाथ हम पूजै चरणा।
हो स्वातम बोधि प्रकाश आये तव शरणा।।

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्ण दशम्यां तपोमंगल मंडिताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

बैशाख वदी नवमी केवलज्ञान लिया।
घाते सब घातिकर्म हर्षे भव्य हिया।
हे प्रभु मुनिसुव्रतनाथ हम पूजै चरणा।
हो पंचम ज्ञान उजास आये तव शरणा।

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्ण नवम्यां केवलज्ञान कल्याणक प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

फागुन कृष्णा द्वादश मुक्ति को पाया।
सिद्धालय क्षेत्र महान इन्द्रों ने गाया।

हे प्रभु सुव्रतनाथ हम पूजै चरणा।
हो पंचमगति में वास आये तव शरणा।

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण द्वादश्यां मोक्ष मंगल मंडिताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

बीसं तीर्थंकर अहा, श्री मुनिसुव्रतनाथ।
सुव्रत स्वात्मसिद्धि वरो, पादयुगल नत माथ।।

आये प्राणत स्वर्ग से, काल लब्धि को पाय।
माँ श्यामा हर्षित हुई, पितु सुमित्र हर्षाय।।

राजगृही में बह चली, गंधित मंद बयार।
जन्म लिया तब इन्द्र ने, उत्सव किया अपार।।

अतिसुंदर नीलाभ तन, बीस धनुष ऊँचाई।
तीस हजार बरस प्रभो! आयु आपने पाई।।

सात सहस संग पाँच सो, वर्षकाल कौमार्य।
राज्य किया पंद्रह सहस वर्ष आपने आर्य।।

हुआ पूर्वभव स्मरण, जागा हृदय विराग।
चंपक तरूतल नीलवन, दिए वसन सब त्याग।।

आत्मलीन होकर किया, तेला का उपवास।
प्रथम पारणा खीर से, वृषभसेन आवास।।

ग्यारह महीने तप किया, फिर तेला उपवास।
पाया तव कैवल्यपद, कर्म घातिया नाश।।

सात सहस संग पाँच सौ वर्ष रहा जो काल।
उसमें ग्यारह माह कम, कहा केवली काल।।

अजितंजय श्रोता प्रमुख, गणधर मल्लि प्रधान।
प्रमुख पुष्पदत्तार्या, सबका पुण्य महान।।

एक मास पहले किया स्वामी योग निरोध।
मोक्ष गए सम्मेद गिरि, हुआ पूर्ण शिव शोध।।

आत्म लीन हो आप सम, पायें हम निर्वाण।
तजें प्राण व्यवहार दस, वरें चेतना प्राण।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिसुव्रत भगवान की जो नित स्तुति गाय।
भाव सहित पूजा करे, स्वयं पूज्य बन जाय।।

(परि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)